

नवधृति

PRGI No. RJBIL/26/A0880



मानवाधिकार

सच साहस न्याय की खबर समाचा

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 07

सम्पादक: श्रवण पंवार, जयपुर मो.: 9251120059

जयपुर, अक्टूबर, 2026

जय श्री माजीशा

माजीशा तेरस महाव्रत
कथा विशेषांक



— सच • अधिकार • समाज —

आवश्यकता

NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
• DIGITAL & PRINT MEDIA •

देश-प्रदेश में समाचार पत्रिका के विस्तार हेतु
पत्रकार/संवाददाता एवं विज्ञापन एजेंट्स
की आवश्यकता है।

अगर आपको अपने क्षेत्र व देश की समस्याओं को



सामने लाने का जुनून है



पत्रकार के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं



समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहयोग करना चाहते हैं



तो यह आपके लिये एक सुनहरा अवसर है।

हमसे जुड़ें, बदलाव का हिस्सा बनें !



आपको मिलेगा



समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर



अपनी आवाज को मंच देने का अवसर



पहचान बनाएं, सम्मान पाएं,



करियर में नई ऊंचाइयों को छुएं

संपर्क करें

जिला संवाददाता – तहसील/ब्लॉक रिपोर्टर,
ब्यूरो चीफ

मुख्य कार्यालय :
जयपुर, राजस्थान

9251120059

www.nms.news

“ मानवाधिकार की रक्षा – हमारा संकल्प, आपकी आवाज – हमारी ताकत ”

</> Code. Create. Innovate.

महादेव पंवार



सॉफ्टवेयर इंजीनियर व डेवलपर



Web Development



Frontend Development



Backend Development



Database Management

“ कोड सिर्फ एक काम नहीं,

यह समस्या का समाधान और बेहतर भविष्य का निर्माण है। ”



@mahadevpanwar.dev



समर्पण



नवाचार



तकनीक



उत्कृष्टता

LET'S
BUILD THE
FUTURE
TOGETHER

नवधृति

PRGI No. RJBIL/26/A0880



मानवाधिकार

सच साहस न्याय की खबर समाचा

प्रकाशक — श्रवण पंवार, जयपुर

वर्ष : 01

अंक : 07

दिनांक : अक्टूबर, 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
के सदस्य शुल्क का विवरण



सदस्यता शुल्क (वार्षिक)
400/- रुपये पोस्टेज सहित

प्रकाशक एवं सम्पादक
श्रवण पंवार
जयपुर (राजस्थान)

जयपुर कार्यालय
पथ नं. 6, प्लॉट नं-39, नियर खेतान
हॉस्पिटल, विजयवाड़ी, सीकर रोड़,
जयपुर (राज.) 302039
मो.: 9251120059
www.nms.news
E-mail: info@nms.news

कम्प्यूटर डिजाईनिंग
जयते प्रिंटर्स मो.: 7790990770

नोट- समस्त विवाद जयपुर
न्यायालय के अंतर्गत रहेगा

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01	सम्पादकीय	01
02	श्री माजीसा माँ के तेरस महाव्रत कथा के नियम	02
03	पूजा पाठ करने की विधि	03
04	श्री माताराणी भटियाणी जी के तेरह महावचन	03
05	श्री माजीसा तेरस महाव्रत कथा	04
06	श्री जसोल बायोसा जी री आरती	05
07	माजीसा तेरस महाव्रत कथा	06
08	माँ शक्ति स्वरूपा माता राणी श्री भटियाणी कवच	08
09	श्री माजीसा चालीसा व आरतियाँ	09
10	माजीसा रो चालिसो	12
11	श्री खेड़ भेरूजी: ॐ आरती श्री भैरवनाथ जी री	13
12	बेटियों के सपनों को पंख देने का संकल्प	14
13	बाहर के दीपों के साथ भीतर का अंधकार भी मिटाएं	17
14	राजस्थान संक्षिप्त परिचय	22

स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक व सम्पादक श्रवण कुमार पंवार के लिए प्रिन्टर्स (मुद्रक)
विजेन्द्र प्रकाश हलचल, विजय पथ, धानी नगर, श्याम नगर, फुलेरा, जयपुर (राजस्थान)
से मुद्रित एवं लखेरा शक्ति क्रियेशन प्रा.लि., सी-1 सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया,
22 गोदाम, जयपुर (राज.) 302039 से प्रकाशित

नवरात्रि विशेष- आस्था, शक्ति और लोकविश्वास की जीवंत परम्परा

प्रिय पाठकों,

नवरात्रि केवल नौ दिनों तक चलने वाला धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में शक्ति, श्रद्धा, संयम, सेवा और नारी सम्मान का संदेश देने वाला महान पर्व है। इन दिनों देशभर में मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना की जाती है। राजस्थान की धरती पर भी देवी-भक्ति की अनेक लोक परंपराएं सदियों से जनमानस की आस्था का केंद्र रही हैं। इन्हीं आस्था परंपराओं में जसोल धाम की मां श्री मांजीसा भटियाणी जी का विशेष स्थान माना जाता है। राजस्थान सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में श्रद्धालु मांजीसा को श्रद्धा और विश्वास के साथ स्मरण करते हैं। नवरात्रि के पावन अवसर पर जसोल धाम की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराएं भक्तों के लिए विशेष महत्व रखती हैं।

मांजीसा भटियाणी जी और तेरस व्रत की लोकपरंपरा

मां श्री मांजीसा भटियाणी जी से जुड़ी तेरस व्रत कथा राजस्थान की लोक आस्था और भक्ति परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। श्रद्धालु इस व्रत को माता के प्रति अपनी श्रद्धा, संकल्प और विश्वास के रूप में करते हैं। तेरस के अवसर पर भक्त मांजीसा का स्मरण करते हुए व्रत, पूजा-अर्चना और कथा-श्रवण करते हैं।

लोकमान्यता में मांजीसा भटियाणी जी की कथा को धैर्य, त्याग, निष्ठा, मातृशक्ति और श्रद्धा से जोड़ा जाता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही इन लोककथाओं ने राजस्थान की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखा है। ऐसी परंपराएं केवल पूजा-पद्धति नहीं हैं, बल्कि हमारे समाज की सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा भी हैं।

तेरस व्रत कथा का मूल संदेश यही है कि मनुष्य कठिन परिस्थितियों में भी विश्वास, सत्य, संयम और सद्भाव का मार्ग न छोड़े। मां के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ जरूरतमंदों की सेवाएं परिवार एवं समाज के प्रति जिम्मेदारी और मानवता का सम्मान भी हमारी धार्मिक चेतना का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

नवरात्रि का संदेश- शक्ति के साथ सेवा

नवरात्रि हमें यह भी याद दिलाती है कि वास्तविक शक्ति केवल व्यक्तिगत सामर्थ्य में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता में है। नारी शक्ति का सम्मान, बेटियों की शिक्षा, जरूरतमंद परिवारों की सहायता, पर्यावरण संरक्षण और समाज में समानता की भावना को मजबूत करना आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

नवधृति मानवाधिकार समाचार का प्रयास सदैव यह रहा है कि समाज, संस्कृति, मानवाधिकार और जनसेवा से जुड़े विषयों को जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ पाठकों तक पहुंचाया जाए। धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान करते हुए हमारा दायित्व है कि हम उनके मानवीय और सामाजिक संदेश को भी नई पीढ़ी तक पहुंचाएं।

इस नवरात्रि आइए, हम केवल मां की आराधना ही न करें, बल्कि नारी सम्मान, मानवसेवा, सामाजिक सद्भाव और कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा का संकल्प भी लें।

मां श्री मांजीसा भटियाणी जी के चरणों में श्रद्धा सहित नमन। मां सभी परिवारों में सुख, शांति, समृद्धि और सद्भाव प्रदान करें तथा समाज में मानवता, करुणा और सेवा की भावना को और मजबूत करें।

शुभ नवरात्रि। जय माता दी।

—संपादक

(नवधृति मानवाधिकार समाचार)

श्री माजीसा माँ के तेरस महाव्रत कथा के नियम

तेरस महाव्रत को कोई भी स्त्री, पुरुष और बच्चे रख सकते हैं। व्रत मैं जात-पात के भेदभाव के बिना कोई भी कर सकते हैं। यह व्रत बहुत चमत्कारी है। 13 तेरस महाव्रत को विधिपूर्वक व्रत करने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

यह व्रत किसी भी माह की तेरस से माँ मोतियों वाली का नाम लेकर शुरू किया जा सकता है। जिस कार्य-सिद्धि के लिए व्रत किया गया हो, उसके लिए माँ जसोल वाली से सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए। यह व्रत फलाहार (श्रगार) लेकर भी किया जा सकता है (जैसे दूध, चाय, फल, मिठाई आदि) या एक समय भोजन करके भी किया जा सकता है। और आप अपनी इच्छानुसार उपवास भी कर सकते हैं।

व्रत वाले दिन सुबह या शाम को माजीसा की फोटो की पूजा करनी चाहिए। पूजा करने से पूर्व नहा-धोकर वस्त्र पहनें। इसके पश्चात पूर्व दिशा में किसी आसन पर कोरा केसरिया कपड़ा बिछाकर उस पर माजीसा की फोटो को स्वच्छ जल से धोकर स्थापित करें। उसको चन्दन, कुमकुम का तिलक लगाएं और पीला वाला पाँच फूल चढ़ाये। अगरबत्ती तथा घी का दीपक जलाकर माँ की वंदना पढ़नी चाहिए और माँ की आरती व स्मरण करना चाहिए। अपनी कार्य-सिद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए और प्रसाद के रूप में अपनी इच्छानुसार फल, मावा, लड्डू, पेड़ा आदि का भोग लगा सकते हैं।

13 तेरस व्रत को यदि संभव हो तो माँ के मंदिर जाकर माँ के दर्शन जरूर करें या अपने घर पर माँ की पूजा की जा सकती है। व्रत वाले दिन कहीं बाहर जाना हो या यात्रा पर हो तो व्रत चालू रखा जा सकता है या फिर उस तेरस को छोड़कर अगली तेरस को व्रत करें।

स्त्रियाँ यदि व्रत के समय रजस्वला होने के कारण अथवा किसी अन्य कारण से व्रत न रख पाये तो उस तेरस को 13 की गिनती में न ले और उस तेरस के बदले अगले माह की तेरस को व्रत करके व्रत उद्यापन करे। एक बार मनोकामना अनुसार व्रत पूर्ण करने के बाद फिर मनोकामना कर, फिर से माँ का व्रत शुरू कर सकते हैं।



क्षमा याचना

हे मात श्री शक्तिस्वरूपा, हे भय हरणी, माँ माजीसा।

अपने भक्तों, भक्तिनियों व श्रद्धालुओं को

श्री शरण की पूर्ण और अनन्य भक्ति दें।

आपका मनोहित स्वरूप हमें हमारी आँखों में सदा बस रहे

और समस्त प्राणियों में आपको दर्शन करें।

वह अपने भक्तों में सदा प्रसन्न करें। (शुभ भवतु) एवं

मस्तु- श्री माँ शक्तिस्वरूपायै नमो नमः।

शक्तिस्वरूपायै नमः।

ॐ दुःख निवारणी माँ स्वरूपायै नमः।

ॐ श्री माँ सत्ये यश काम जसोलगढ़ वासिनि ये नमः।

पूजा पाठ करने की विधि

श्री माजीसा प्रतिमा के सामने या माँ का ध्यान करके, भी पूजा की जा सकती है। जो कोई इस संसार में माताराणी भटियाणी जी, की भक्तिपूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखकर करता है, उसकी सारी बाधाएं दूर हो जाती हैं सभी कष्ट कलेश और दुःख-दर्द मिट जाते हैं। सभी सुखों की प्राप्ति होती है यश और मान प्राप्त होते हैं माजीसा सबकी इच्छा, पूर्ण करती है माजीसा ने स्वयं कहा है कि- मैं सत्य हूँ यह बात सत्य मानोगे, तो उसका अनुभव स्वयः होगा।

जो भी व्यक्ति सच्चे मन से मेरी शरण में आएगा, मैं उसके सभी कार्य पूर्ण करूँगी, जो मुझे माँ स्वरूप (भटियाणी) मानेगा, उसी रूप में दर्शन दूँगी जो भी व्यक्ति सच्ची सहायता लेने मेरे पास शरण में आएगा, मैं उसकी अवश्य सहायता करूँगी। जो भी भक्त मुझे तन, मन, और वचन से स्मरण करेगा उसका ऋण (कर्ज) मुझ पर चढ़ जाता है जो नित्य मुझे भजता, शास्त्रों में भी लिखा गया है कि जब-जब भी धर्म की हानि और अधर्म का बोल बाला हुआ है तब-तब ने न जाने कितने रूपों में इस संसार में शक्तिजन्म लिया। और पुनः धरती पर कर्म की स्थापना।

मनुष्यों को धर्म का नया रास्ता दिखाया। इन्ही अवतारों में आज मारा राणी भटियाणी जी नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

उनके नाम से कौन परिचित नहीं है। माताराणी भटियाणी जी अपने भक्तों व भाविका श्रद्धालुओं को स्वप्न में प्रकट होती है और होती रहेगी साक्षत भी होती है।

सच्चे मन से याद करें श्रद्धा व विश्वास रखे, इस धोर कलयुग में तो माजीसा ने कई अद्भुत चमत्कार किए अपने भक्तों पर उनकी कृपा सदैव बनी रहती है, आज भी यदि माजीसा को सच्चे मन से पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखकर विधिपूर्वक की जाए तो उनकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है उसे सुख समृद्धि और शांति प्रदान करते हैं माजीसा साक्षात् देवी है माजीसा का अटूट श्रद्धा और विश्वास रखकर धैर्यपूर्वक तेरहा महाव्रत विधिपूर्वक किया जाये तो निश्चित ही सभी मनोकामना पूर्ण होती है। माजीसा आगे दिपक जलावे तथा धूप करे केसरिया वस्त्र का आसन बिसाकर माला जाप करे पीले फूल या केसरिया फूल माताजी को चढ़ावे, सगुन्धित अन्तर चढ़ावे, एक चित ध्यान करके पूजा पाठ करें, मिष्ठान भोग लगावें, जिससे भक्त के तमाम रोग माताजी हर लेगी, कहते हैं ना कि-

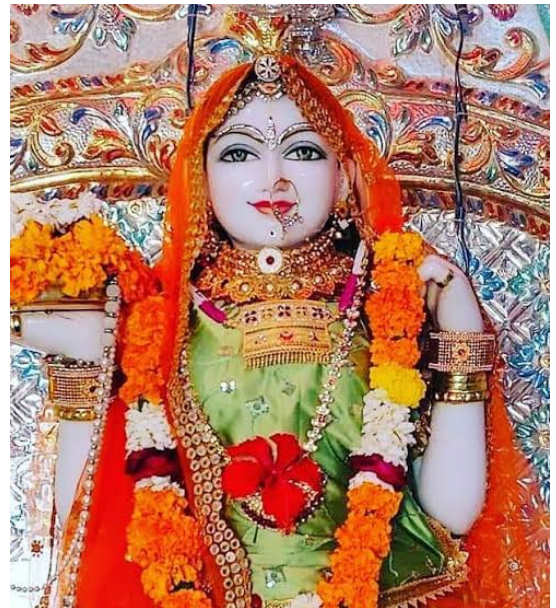
जिस घर में हो माजीसा का पूजा पाठ।

उस घर में रहता हर वस्तु का ठाठ ॥

श्री माताराणी भटियाणी जी के तेरह महावचन

रचयिता- पंडित राजू महाराज

1. जो भी भक्त जसोल गढ़ आएगा आपदा दूर भगाएगा
2. जो मेरा करेगा दर्शन वो सदा रहेगा प्रसन्न
3. मुझे सदा जीवित ही जानो अनुभव करें सत्य पहचानो
4. मन में रखना दृढ़ विश्वास करूँगी सबकी पूर्ण आस
5. मेरी शरण आ खाली जाये हो तो कोई मुझे बताये
6. जो गऊ बाह्यन की सेवा करेंगे में मेरी पूर्ण सेवा मानूँगी
7. जैसा भाव रहा जिस जनका वैसा रूप हुआ मेरे मन का
8. भार तुम्हारा मुझ पर होगा वचन मेरा झूठ न होगा
9. आ सहायता लो भरपूर जो माँगा वह भक्त से नहीं दूर
10. धन्य-धन्य व भक्त अनन्य मेरी शरण तज न अन्य
11. अनहोनी को होनी कर दू भक्तों री खुशियाँ झोली भर दूँ
12. जो जसोल दरबार दे फेरी उस भक्त रे काम लगाऊँ
13. दुःखों को मिटा दू आता पाता जो भक्त करेला तैरस व्रत कथा



श्री माजीसा तेरस महाव्रत कथा

एक समय एक गांव के एक धनी वर्ग का बड़ा सेठ अपने परिवार के साथ रहता था। उसके यहां एक गरीब नौकर रहता था सेठ के एक सुन्दर कन्या थी। जिसका नाम सावित्री था। वह उसकी माँ व पूरा परिवार बड़े खुशी से अपना जीवन व्यापन करते थे। लेकिन परिवार को किसी कि नजर सी लग गयी कि सेठ का पुरा कारोबार समाप्त हो गया व गरीबी में अपना जीवन व्यापन करने लगे वह पुरा परिवार दुःखी रहने लगा एक दिन सेठानी व सावित्री अपने पड़ोसन के यहाँ जाती है वहा उन्होंने तेरस का व्रत की कथा सुनी व माँ मोतियों वाली का प्रसाद प्राप्त किया तब सावित्री ने उस पड़ोसन से कहा ये आप किसकी पूजा व्रत कर रहे थे व इस व्रत से क्या फल प्राप्त होता है। तब उसने कहा जो असम्भव का संभव कर सके जो पराजय पर विजय प्राप्त कर सके उस माताराणी भटीयाणी जसोल माँ का तेरस का व्रत है जिससे जो माँ से माँगते है वह फरियाद पुरी होती है।

सावित्री उससे कहती है बहन आपने इस व्रत से क्या लाभ प्राप्त किया वह हमें बताओ तब उसे कहा कि इकलौता पुत्र की शारीरिक हालत बहुत खराब हो गई थी व उसके हाथ-पांव काम नहीं करते थे।

उनकी आँखों की रोशनी एक दुर्घटना में चली गई, जिससे मैंने अपने पुत्र का इलाज बहुत से डॉक्टरों हकीमों का इलाज कराया अंत में सभी ने हार मान ली तब हम दोनों ने मन में विलाप कर रहे थे।

तभी हमारे घर पर एक ब्राह्मण ने आवाज लगाई भिक्षाम देही, तब मैं जब भीक्षा ले गई तब उस ब्राह्मण ने मेरे मन को हताश देखा तो पूछा बहन तुम्हारा मन उदास क्यों है तब मैंने कहा महात्मा जी को भगवान की मर्जी थी वह तो हो चुका तकदीर के आगे किसकी चलती है तब ब्राह्मण ने अपना परिचय पंडित राम करण (अग्निहोत्री) बताते हुये पंडित जी ने कहा- बेटी तुम चिन्ता मत करो व अपनी पीड़ा पूर्ण रूप से मुझे बता मैंने मैरी आप बीती बताई और रो पड़ी हे भगवान ! मेरा एक पुत्र है वो भी किसी की नजर लग गई जो खटिये पर मौत की जंग लड़ रहा है तब ब्राह्मण ने कहा बेटी मृत्यु पर विजय पाने वाली एक शक्ति है

व है 'जसोल की माता राणी' जिसके नाम से तु तेरस का महाव्रत कर और माँ से मन्त्र माँग वह तुम्हारी अर्जी जरूर सुनेगी और तुम्हारे पुत्र को जीवन दान देगी। तब मैंने ब्राह्मण के कहे अनुसार मैंने व्रत करने लगी उस चमत्कारी व्रत से आज मेरा पुत्र पूर्णरूप से माँ तीन व्रत से ही सही हो गया तो इस व्रत व माँ जसोल वाली माँ पर पूर्ण विश्वास है जो मेरी व हर व्रत करने वालों की इच्छा पूर्ण करेगी तब सावित्री ने पूछा बहन माँ का व्रत करने वाले को क्या देती है तब वह कहती है निर्धन को धन, पुत्र वैभव, लक्ष्मी व हर कष्टों से छुटकारा देती हैं तब सावित्री ने अपने नौकर से शादी करने के लिये व्रत करती हैं।

कुछ माह बाद उसके पिताजी उसे अपना जँवाई बना देते है। तब उसका माँ के व्रत पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। तब दोनों माँ बेटी अपने कारोबार की बढ़ोतरी की कामना करती है वो उनका व्यापार लाखों से करोड़ों तक चलने लगा वह ससुर जवाई हीरा का व्यापार एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर व्यापार करन लगे एक दिन दोनों ने माँ के मंदिर पहुंचे व दर्शन किये लेकिन जल्दी की वजह से प्रसाद न ली तब माँ का प्रकोप हो जाता है व उन दोनों को रावल (हवेली) बुलाता है तब वह हीरे लेकर वहां पहुँचते है व हिरे ठाकुर को बताते है।

माँ के प्रकोप से वह सब हीरे काँच के टुकड़े बन जाते है तब ठाकुर उनको ठंग की सजा देकर जेल में बन्द कर देता है। बंदी गृह में होने के मन में याद आया कि आज जो हम है वह जसोल माँ के चमत्कार से हैं। हमने उनके प्रसाद की अवहेलना कि जिसका कष्ट हमें भुगतना पड़ रहा तब दोनों ने माँ को याद किया व उसने दूसरे तेरस के दिन का व्रत किया हे माँ हम तो बेटे हैं, हमसे गलती हो जाती है लेकिन आप तो माँ उदार का सागर होती है आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करो और हमें बन्दी गृह से बाहर निकालो। माने उनकी मुराद सुनी और रात है उस ठाकुर के स्वप्न मैं जाकर कहा कि- हे राजन ! तुम इन्हें छोड़ दो वरना मैं तुम्हारे शासन को नष्ट कर दूंगी, यह मेरे प्रकोप से यहाँ बंद हैं। माँ के दर्शन से ठाकुर धन्य हो जाता है और सुबह दोनों को पूर्ण धन धान्य से सम्पन्न कर छोड़ देती है।

अध्याय-2

एक समय एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी वह अन्धी थी व उसके एक पुत्र था वह बहुत ही गरीब थे, बुढ़िया बच्चों की सलामती के लिये माँ जसोल वाली के तेरस का व्रत करती है व बच्चे की प्रगति की कामना करती है। बच्चा सुबह उठकर माँ को प्रणाम करके गायों को चराने जाता है व उससे अपने व अपनी माँ का पालन-पोषण करता है। पुत्र की यही दिनचर्या हमेशा रहती है। माँ पहले अपने पुत्र को भोजन कराकर उसे खाना करके माँ की पूजा अर्चना करती है, माँ चमत्कार से उस पुत्र की और एक लीला करती है। पुत्र गाय चराते-चराते नौद में सो जाता है तो उसे स्वप्न में माँ कहती है- पुत्र तुम उस जगह को खोद तुम्हारे गरीबी के दिन समाप्त हो जायेंगे।

वह माँ के कहे अनुसार करता है व अमीर हो जाता है, गाय चराने वाला कई हजारों गायों का मालिक बन जाता है व अपनी कामयाबी का पूरा श्रेय अपनी माँ को देता है। कुछ समय बाद उसकी शादी होती है और अपनी पत्नी को कहता है तू मेरी सारथी है लेकिन मैं एक बात तुम्हें भलीभाँती कह देता हूँ- जो मैं आज हूँ वह सब मेरी माँ के पुण्य का भाग है, तू उन्हें कभी भी किसी प्राकर कष्ट मत देना व दोनों पत्नी-पति माँ की सेवा करते हैं लेकिन बहुत किसी के भड़काने में आती है और अपने पति से कहती है- आपके जाने के बाद तुम्हारी माँ क्या पता किस की सेवा करती है व चुरमा चढ़ाती है। मुझे इन सब से डर लगता है लेकिन पुत्र कहता है मेरी माँ तो भगवान की पूजा करती है लेकिन पत्नी के बार-बार कहने से पुत्र माँ से कहता है- तू किनकी पूजा करती है और क्या वह अपनी माँ को बहुत भली बुरी गालियाँ देती है, तब है भुख तु तेरी माँ को न पहचान सकी है, ये वह माँ है जो मैं व्रत का पुरा सोभाग्य तेरी झोली में डाल दिया व आवाण शांत हो जाती है। तब माँ बेटे को पुरी बात कहती है- मैं माँ के तेरस का महाव्रत करती हूँ तब पुत्र भी माँ जसोल वाली का प्रणाम करता है व दोनों पति-पत्नी बूढ़ी माँ के लिए माँ से प्रार्थना करते हैं व तेरस का व्रत व माँ से अपने माँ की दोनों आँखों की रोशनी माँगते हैं। माँ मोतियाँ वाली उनकी फरियाद सुनती है व औरत के आँखों की रोशनी दे देती है। जिस प्रकार तू इस परिवार के कष्टों का निवारण किया, उसी प्रकार मेरे कष्टों का निवारण

करना। शिवा कहता है- माँ के चमत्कार लाखों हैं, माँ का पहला चमत्कार, ठोली दूसरा देवड़ी राणी को दिया, तीसरा कुम्हारनी की आँखें आदि बाकी गुणगान क्या करूँ कोई माप है न पार। जय-जय माँ मोतियाँ वाली



श्री जसोल बायोसा जी री आरती

जय बाया जसोल गढ़ वाली, सातो करो रखवाली।
करी आरती थोरी, सेवा मानोभारी।
जय बायो सा जसोल, जसोल री बाया रखो छत्र-छाया।
जय जोगनी बाया सग खेतल भैया, जय बायो सा जसोल।
सातो साथ आवे, सातो दीप माँ जगावो।
फूलड़े री माला लावों, शरणों में शीश नमावो।
जय बायो सा जसोल, सातो बहनों पहनो कपड़ा गहना।
माँ भक्तजनों माँ ध्यान दो, जय बायो सा जसोल।
बैठी खेजड़ी जल तलाब माता, भक्तों री सुखदाता।
जय बायो सा जसोल, देवो जगत में पर्चा।
होवे घर-घर चर्चा, रथ सवारी करो सवारी साथो साथ।
जय बायो सा जसोल, जो बायो सा री आरती गावें।
पंडित राजेन्द्र अवस्थी ध्यान लगावे, जय बायोसा जसोल।
वो नर अति सुख पावे, जो बायो सा री आरती गावे।
रोग द्वेष सब मिट जावे, जय बायोसा जसोल।

माजीसा तेरस महाव्रत कथा

हमारी लगातार पुस्तकों की उपलब्धि के बाद भक्तों के पत्र के जवाब आया है, हमें माजीसा तेरस महाव्रत की कथा बताई व सुनाई जाए, इस लिये हम आपके बहुत प्रभारी हैं। जो भी माँ माजीसा राणी भटियाणी के आदेश अनुसार ही हम कुछ लिख पाते हैं। जो भी मुझे आदेश हुआ व मैंने इस तेरस महाव्रत कथा में प्रस्तुत किया है, मुझे आपने हमेशा सहयोग व सैन्य दिया व आगे भी मिलता रहेगा। इसी आशा के साथ ज्योतिषराज पंडित राजु महाराज जसोल द्वारा वर्णित तेरस व्रत कथा—

एक समय की बात है, एक छोटे से मालाणी के गांव जसोल में एक धनी व्यापारी रामदास नामक सेठ रहता था। वह सेठ धन-दौलत, सुख-ऐश्वर्य से पूर्ण रूप से सम्पन्न था। लेकिन उस सेठ सठणी को एक दुःख हमेशा सताता था- उनके कोई सन्तान नहीं थी, इस कारण हमेशा दुःखी रहते थे लेकिन सेठ-सेठणी बड़े ही दयालुभाव से धर्म व सेवाभावी थे, उनके द्वार पर जो भी आता खाली हाथ कोई न जाता था। चाहे साधु सन्त फकीर, ब्रह्मण आदि आते, आशा के अनुरूप उसे भिक्षा में मिलता था।

एक दिन की बात है, उनके द्वार पर मालाणी के पंडित अग्निहोत्री अवस्थी गौत्र के पंडित शिवा नामक ब्रह्मण आता है और व उस सेठानी से भिक्षा देने की बात कहता है। श्री महाराज की आवाज सुनकर तुरन्त सेठानी अपने घर से द्वार पर आती है व ब्रह्मदेव को प्रणाम करती है तथा आसन पर बैठती है तथा भीक्षा लाती है। तब ब्रह्मण आई भिक्षा देख अतिखुश होते हैं तथा शुभसन्तान की आशिष देते हैं। इतने में पास की पड़ोसन ताना मारते हुई कहती हैं- आज सुबह-सुबह किस बांझण का मुँह देख लिया मेरा तो पूरा दिन अब बेकार ही जायेगा। इतना ताना सुनने के बाद सेठानी के आँखों से आँसू आ जाते हैं।

तब महाराज कहते हैं— बेटी तू चिन्ता मत कर, क्यों रो रही हो। संसार का तो यह नियम है- सुख-दुःख आते-जाते रहते हैं। तब सेठानी कहती हैं- नहीं महाराज नहीं, यह बात नहीं है, जो आपने मुझे आशीर्वाद दिया। जिसका कोई, महत्त्व नहीं है क्योंकि मुझे डॉक्टर-हकीमों ने बांझण घोषित कर दिया है, मैं

जिन्दगी भर पुत्र सुख नहीं पा सकती, महाराज आप मेरा भाग्य तो देखिये तनिक, आप तो एक अच्छे ज्योतिषाचार्य हो, मेरी भी हस्तरेखा व मेरा भाग्य आप अपने हिसाब से देखिये। तब ब्रह्मण देव सेठानीजी की हाथ की रेखा देखने लगते हैं। फिर अपने साथ लाए पचांग को देखते हैं और सेठानी से कहते हैं- बेटी संसार में दुःखों का कोई ना कोई समाधान जरूर होता है।

तब महाराज कहते हैं— इस घोर कलयुग में पराजय पर भी विजेता की ताकत रखें व माँ इस कलयुग में हाजीर हुई- माता राणी भटियाणी के रूप में, जसोल गांव में विराजमान हैं। मेरा कहना मान, तू एक काम कर और नियमित 'ॐ नमोः शक्तिस्वरूपाय नमः' का नित्य जाप अपने श्रद्धाभाव से आत्मविश्वास से जपती है जाप, उसके मिट जाते हैं- सब सन्ताप और मनो कामना पूरी होती है।

वह माँ हर समय हर समस्या का समाधान अवश्य करती है व हर महिने की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी महाव्रत कर, तेरह महिने तक नियमित महाव्रत करने पर हर कामनापूरण होती है। तू त्रयोदशी महाव्रत कथा कर तेरी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। मुझे जसोल माता राणी पर पूर्ण विश्वास है, वह अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करती है। जैसे ही ब्रह्मण देव ने कहा, वह सेठ-सेठानी ने जसोल पहुंचकर श्रद्धाभाव से पूजा अर्चना की व महाव्रत करने का संकल्प किया तथा तेरस महाव्रत कर, हर महिने करना शुरू कर दिया। ठिक नौ महिनो के बाद उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम माँ के नाम का स्वरूप रखा गया।

सेठानी ने महाराज कहे अनुसार महाव्रत तो किया, लेकिन महाव्रत का उपासना करना भूल गई तथा महापूजन भी नहीं किया। जब पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो सेठ-सेठानी अपने पुत्र की मोह में यह भी भूल गई कि हमें इस महाव्रत का उद्यापना (उजमणा) महापूजन भी करना है व हमेशा माँ से अरदास व नित्य पूजा पाठ करती है व माँ से प्रार्थना करती है माँ मेरे पुत्र की बुरी नजर से रक्षा करना। जब वह 5 साल का हो जायेगा। तब हम आपके द्वार आकर तेरस महाव्रत महापूजन करूंगी लेकिन समय बीत गया, मोह-माया में दोनों भूल जाते हैं व स्वरूप जब

11 साल का हो जाता है तब पुत्र स्वरूप पर कोई अनशह शक्तिस्वरूप पर प्रभाव करती- स्वरूप कभी गिरता है तो कभी रोता है, चिल्लाने लगता है। तब सेठ-सेठानी स्वरूप को डॉक्टरों-हकीमों को बुलाते हैं लेकिन यह बिमारी किसी के समझ में नहीं आती है। तब सेठानी जी बहुत दुःखी होती हैं व उनकी धन दौलत अपने पुत्र की देख-रेख में बरबाद हो जाती है मगर इनका कोई समाधान नहीं निकला।

सब सेठ-सेठानीजी को एक ही आशा नजर आती है- माँ मोतियां वाली माता राणी भटियाणीजी पर, और माजीसा से प्रार्थना करती हैं, विलाप करती हुई कहती हैं- माँ हमारी रक्षा करो, कुछ-कुछ मेरी समस्या का निदान करो, मैं आपकी शरण आई हूँ। तब अबियागत आई हूँ, मेरी इतनी परीक्षा न लें, माँ हम तो नादान हैं व नादान ही रहेंगे, माँ तुम तो ममता मई माँ हो, एक माँ का दर्द तुम ही जान सकती हो। तब माँ राणी भटियाणी जी अमिन्हौत्री अवस्थी ज्योती पंडित शिवा ब्रह्मण के सपने में आती हैं, दर्शन देती हैं।

तब पंडित शिवा ब्रह्मण कहता है- माँ मैं तो धन्य हो गया, जो आपके दर्शन दिया। माँ मेरा जन्म सफल हो गया कि आपके दर्शन प्राप्त हुए। माँ शिव से कहती हैं- बोल विप्रदेव तुम्हें क्या चाहिये?, तब पंडित शिवा कहता है- माँ आप से प्रार्थना करता हूँ मेरे नगर सेठ की इतनी बड़ी परीक्षा क्यों ले रही हैं? माँ तुम उनको माफ कर दो। तब माँ हँसती हुई कहती हैं- मुझे ब्रह्मण इसीलिये प्रिय है, क्योंकि वह हमेशा परोपकार का ही सोचता है। तब पंडित शिवा को कहती हैं- तुमने मेरे भक्तों को आस्था दिखाई, तेरस का महाव्रत करवाया, लेकिन वह पुत्र मोह में व्रत के फल पश्चात भी पूर्ण व्रत विधि नहीं की। तब हाथ जोड़ शिवा पंडित कहता है- आप उन्हें माफ कर दो, माँ शिवा को प्रार्थना करता है- माँ मैं सेठ-सेठानी उनके भूल सुधार कराऊंगा व आपसे मेरी प्रार्थना बार-बार यह है आप उन्हें माफ कर दें।

तब माँ भटियाणी जी कहती हैं- विप्रराज! मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करती हूँ मगर मेरा महाव्रत का उद्यापना विधि-विधान से सेठ-सेठानी को करने को कहनाख तुम्हारे कारण उन्हें माफ कर देती हूँ।

तब शिवा पंडित सुबह उठते ही नगर सेठ के पास जाता है

व सारी भूल बताता है। तब से सेठानी जी शिव कि बात मानती हैं, अपनी भूल कबूल करती हैं व माँ से आग्रह करती हैं। माँ पुत्र तो नादान होते हैं तो क्षमा करती हैं माँ मेरी भूल क्षमा करो। आप मेरे पुत्र की रक्षा करो।

तभी माँ कि एक जैसी लीला होती है व पल झपकते ही पुत्र स्वरूप तुरन्त ठीक हो जाता है बिना दवा पानी के और अपने पलंग से उठकर जय जसोल माता की बोलने लगता है और खड़ा हो जाते हैं। सब घर परिवार वाले यह चमत्कार देख अचम्भित हो जाते हैं, तब पूरा गाँव व परिवार पंडित शिव के साथ माँ राणी भटियाणी जी दरबार पहुँचते हैं व बारम्बार माजीसा की जय जयकार करते हैं। विधि विधान में महाव्रत का उपासना कराते, तेरह सुहागिनों द्वारा विधि विधान अनुसार उद्यापना किया व माजीसा रातीजोग भी दिया व सबकी रक्षा करने की कामना की। तब सभी ग्रामवासी पंडित शिवा ब्रह्मण का हाथ जोड़ प्रणाम कर, माँ के और भी चमत्कार के बारे में पहुँचते हैं।

तब पंडित शिवा ब्रह्मण कहता है- इस त्रयोदशी महाव्रत को कई फल मिलते हैं। निर्धन-धनवान हो जाता है, कोड़ी क कलंक मिटाता है। नपुतों को पुत्रवान करती है, अनहोनी की होनी कर देती है।

माजीसा खुशियों की झोली भर देती है और इस महाव्रत को जिस जिसने किया, उनकी अभिलाषाएं मोतियों वाली ने पूरी की। आप भी पूर्ण सच्ची श्रद्धाभाव व आत्मविश्वास से महाव्रत करें, आपकी तमाम मुरादें माँ पूर्ण करेंगी, यह तो माँ पग-पग पर्चा देवण वाली है।



रचनाकार-
प. राजुमहाराज जसोल

माँ शक्ति स्वरूपा माता राणी श्री भटियाणी कवच

माँ सरूपा जग जननी मुझे शक्तिदो, करूँ मैं तुम्हारा ध्यान,
मैं अबोध बालक हूँ, मुझे बल, बुद्धी, दो विवेक ज्ञान जीवन
यात्रा मेरी निर्विघ्न हो करो, मेरा कल्याण अन्तःकरण सिंहासन
पर बैठो, दया निधान सुनो विनय मेरी दे दो माँ, अभय वरदान
भटियाणी माँ तू भय मिटाती, दिन दुःखी को गले लगाती मुझे
माजीसा सकंट ने घेरा।

**आप बिना कौन हरे दुःख मेरा
माँ सरूप पूजत है सब नर नार**

लोक रक्षक सरूप रूप में, अतितायियों का किया प्रतिकार
माँ शक्तिस्वरूप रूप धारण कर किया असुरों का नाश, मृत्यु न्यय
रूप में दिया आरोग्य दान। तुम्हारी शरण में आते मिलता अमरत्व
का वरदान श्रद्धाभाव व आत्मविश्वास का दीप करूँ तैयार आराम
दे, अपनी शक्ति का मिटाकर मोह अन्धकार शक्ति माँ रूप
स्वरूप, तुम भरते सबके भण्डार मर्यादा व क्षत्रिये में सिमित
करते संसार, माँ भय मिटाती माँ भटियाणी कर दे दूर कलेश
अपनी, चमत्कारी चांदनी से मिटाते दुश्मिताओं के में शक्ति का
अहसास कराए, अनेक चमत्कार दिखाते, पैर बन्धी चिड़िया की
भांति भक्त जसोलगढ़ खींच ले आते।

श्री माताराणी के अदभूत चमत्कारी मन्त्र

-पं. राजू महाराज

नियमित करें, नित पूजा अर्चना पाठ,
माताराणी भटियाणी कर देगी,
आपके घर आंगन, में हर बात का ठाठ

पुत्र कामना के लिये मन्त्र-

पुत्रदायिनि माँ शक्तिस्वरूपाये नमः

नित्य 108 माला का पाठ, रोग दोष निवारण मन्त्र-

ॐ रोग दोष हननी माँ शक्तिस्वरूपाये माँ

नित्य 108 माला का करे पाठ, सुखशान्ती का मन्त्र-

ॐ सुखदायिनि माँ शक्तिस्वरूपाये नमः

नित्य 108 बार माला का करे पाठ, शरीर कष्ट दूर करने का मन्त्र-

ॐ शरीर रोग निवारणी माँ स्वरूपाये नमः

नित्य 108 माला का करे पाठ, धन प्राप्ति मन्त्र-

ॐ धनदायिनि शक्ति माँ स्वरूपाये नमः

नोट- यह मन्त्र सिद्ध महामन्त्र है, इसको श्रद्धाभाव व आत्म
विश्वास के साथ जपें।



॥ श्री माजीसा चालीसा ॥

दोहा—

जसोलगढ़ में थे प्रकट्या महारानी, पाया है उजालो च्यारो मेरा॥
जैसलमैर, जोधाणो थाने ध्यावे, और आखो ध्यावे बीकानेरा॥
म्हारी थाने है विनती, थे राखिजो म्हारी लाज।
थारी शरण में म्हे पड़्या हां, माजी सा महाराज॥

चौपाई

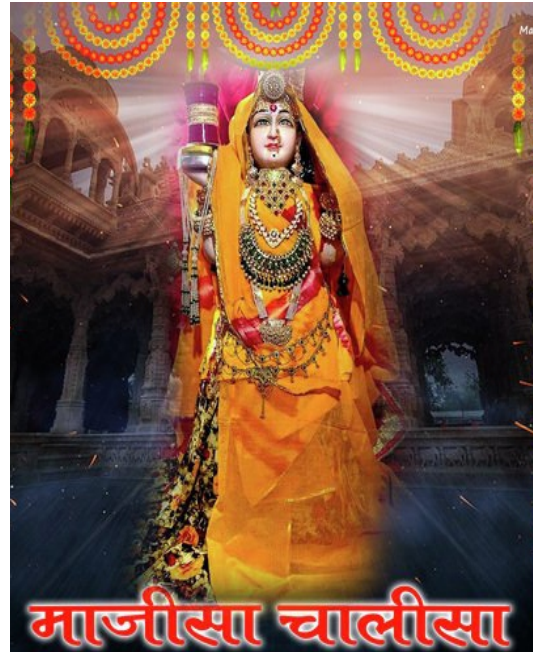
जय जय जय माता भटियाणी। कृपा करो माँ, जय कल्याणी॥
जो कोई शरण आपकी आता। जीवन सफल वांछित फल पाता॥
लाखों दुःखी माँ, आपके तारे। आये रोते हुए, जाये हँसते सारे॥
आपके द्वार पे जो भी आया। आकर वह कभी नहीं पछताया॥
जो जीवन की छोड़ दे आशा। तिमिर नाश कर, करा प्रकाशा॥
अनहोनी को होनी कर दो। रेतों की तुम झोली भर दो॥
जसोलगढ़ है आपका धाम। नर-नारी ले आपका नाम॥
दूर-दूर से धाम पे आते। मन वांछित फल वे है पाते॥
आपकी है निराली माया। कोढी भी पावे कंचन काया॥
भूत प्रेत सब आपसे कापे। जब भी नाम आपका जापे॥
कटे रोग सब मिट क्लेशा। फिर नर निर्भय होय हमेशा॥
जीवन ज्योति आप है देते। दीन दुःखी सब आप से लेते॥
गऊ-ब्राह्मण के हो रखवारे। इनके खातिर शत्रु संहारे॥
आपके तेज को नमस्कार है। इस कलयुग मैं चमत्कार है॥
राठौड़ी बनासा थौरे सागे। ले घोड़ों थारे चाले आगे॥
ढेल मजीरा नौबत बाजे। सुबह शाम थारी आती साजे॥
हरेक धाम की शोभा न्यारी। झाड़ कहावे थारा पूजारी॥
लाल रंग थारे मन भावे। तारों का चुनड़ चचौर कहावे॥
आप हो चण्डी के अवतारी। थारी है महिमा अती भारी॥
दिये आपकी जोत निराली। कर दर्शन कोई जाये न खाली॥
जीवन दान आप है देते। बदले में श्रद्धा सुमन ही लेते॥
भक्त आपके जम भी पुकारे। हाजिर होके दुःख निवारे॥
चुन-चुन दुष्टों को आप संहारो। भक्ति भाव को आप उबारो॥
बल बुद्धि के आप है दाता। हो साक्षात जग जननी माता॥
वचन आपके खाली न जाते। महा विपदा से आप बचाते॥
जो भी दर पे आपक आया। जो माँगा वैसा ही पाया॥

बड़े-बड़े ज्ञानी महा ज्ञानी। सबने बात आपकी मानी॥

जानते सबक मन की बात। रक्षा करते दिन और रात॥
जो राही पथ भ्रष्ट हो जावे। आपकी ज्योति से मंजिल पावे॥
हमने लिया है आपका शरणा। आप हो रक्षक फिर क्या डरना॥
जय भटियाण जय कल्याणी। है शरण आपके हम सब प्राणी॥
आपके परचे हैं बड़े भारी। गुण गांवे जब नर और नारी॥
धूप दीप से सजे आरती। राठौड़ी बनासा है सारथी॥
निकले जब भी माँ की सवारी। 'जय' घोष करे जनता सारी॥
शरण आपकी हम पड़े हैं। माँ हम हैं छोटे आप बड़े है॥
आपकी महिमा अपरम्पार है। हम मन्द बुद्धि और अनाधार है॥
क्षमा दान देन महारानी। हृदय ज्ञान हो अमृत वाणी॥
जो कोई पढ़े ये रोज चालीसा। अन्न-धन्न लक्ष्मी दे माजीसा॥
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे। उसकी नैया पार लगावे॥
माँ सुणगे विनती, जन पुकार की। जय बोलो जसोल दरबार की॥

दोहा—

भक्ति युक्त और सच्चे मन से जो पढ़े चालीसा कोय।
तापर सदा मेहरबानी, श्री माजीस की होय॥



माजीसा श्री भटियाणी जी री आरती

आरती नं. 1

जय भटियाणी माता 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 सुख सम्पत्त मोहे दहिजो दुःख हरले माता
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 विपदा हरणी, मंगल करणि दुष्ट दत्त माता
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 रोग पीड़ा सब हरलो शुद्ध बुद्धि दो माता
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 नाम स्वरूपा रूप अनुपा सुरत मन भावे
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 नर नारी सब ध्यावे इच्छा फल पावे
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 कुरति अंगिया लाल चन्दड़ी लहंगा मुलसानी
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 हार गले हसोवे ओ भटियाणी माता
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 सिर पर रखड़ी हाथ में बंगड़ी चुमड़ा हाथ सोवे
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 पग मैं पायल बिछिया में झांझर झणकावै
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 लड्डू जलेबी जठे चुरमा ज्योत जागे माता
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 धूप दीप करे साथ ही बाजे नोपत बाजा
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 हे भटियाणीजी आरती जो कोई नर गावे
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 दुःख दरिद्र जावे सुख शान्ति घर आवे
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 हे माजीसा भरो भण्डार गुण थोरा गाऊ
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'
 आरती भक्त गावे हृदय खोल मारा
 'ओ मारी जय भटियाणी माता'

॥ विघ्न हरण कल्याणी ही की ॥

टेक- आरती श्री माजीसा री

आरती नं. 2

जाके तेज से जग उजियरा। माँ का मन्दिर है अति प्यारा॥
 माँ की छवी लागे अति नी की। आरती...॥1॥
 जो भक्त के है अति प्यारे। जन जन के है जो रखवारे।
 हम सब पे है कृपा उन्ही की। आरती...॥2॥
 जब जब माँ को हम पुकारे। हमारे कष्टों को तुरन्त निवारे।
 देर न करते पल भर ही की। आरती...॥3॥
 माँ की माया है अति भारी। गुण गावे सब नर और नारी।
 दिपे जोत सदा ही गऊओं के घी की। आरती...॥4॥
 माँ की भक्ति है फलकारी। हर एक धाम पे झाड़ पुजारी।
 निर करते पुजा इन्ही की। आरती...॥5॥
 माँ को सब जग शीश झुकावे। श्रद्धा सुमन धाम पे लावे।
 होवे पूरी इच्छा सब के जी की। आरती...॥6॥
 पावन धाम की शोभा है न्यारी, दर्शन खातिर हम बलिहारी।
 भक्ति हमारी माँ पड़े न फीकी। आरती...॥7॥

श्री लाल बन्ना जी री आरती

आरती कीजे, लाल बन्ना की, मात स्वरूप लला की।
 जिनके नाम सूं भूत भय भागे, रोग दोष निकट न झाके।
 राणीजी के पुत्र बड़ बलाई, भक्तों सदा साईं जो कोई।
 नर ध्याने रोग पीड़ा तरत हटावे, भोग लगत है दुध पतासा।
 आरती लाल बन्ना की, बना भूतन नाशा,
 आरती लाल बन्ना की...
 लाल बन्ना को ध्यान लगावे, दुष्ट देव आडेनी आवे।
 ग्रहदोष मिट जावे आरती लाल बन्ना की।
 आरती लाल बन्ना की...
 माताजी के काज सवारे
 बड़े-बड़े दुष्टों को मारे, चढ घोड़े पर लाल बन्ना।
 भक्त जनों को तारे, आरती लाल बन्ना की...
 कसन थाल कपूर वाली आरती उतारत
 राजेन्द्र अवस्थी जो कोई लाल बन्ना सा की आरती गावे,
 वो नर अति खुश हो जायेगा। आरती लालबन्ना की...

आरती

श्री संवाई सिंह जी महाराज री

जय संवाईसिंह राजा, हो दाता जय संवाईसिंह राजा...
 करो आरती थोरी, बाजे नौबत बाजा॥ जय संवाई दाता की
 आप अवतारी, जग में पर्चा भारी ध्यावे नर-नारी हाथ जोड़ दाता
 जय संवाई दाता की...॥
 हाथ मैं भाला जग रखवाला मालाणी धरती रा वीर सपूतदाता
 जय संवाई दाता की...॥
 घोड़ों सोवे शिश साफो, तलवार मन भाये, सफेद वस्त्रदाता
 जय संवाई दाता की...॥
 भक्त प्रतिपाला गऊमाता रखवाला,
 भक्तों के संकट हरौ शरीर करो ताजा
 जय संवाई दाता की...॥
 ध्यावे छत्तीस कौमियां थे देव भौमियां गाय करण जुड़ा गये,
 मालाणी राजा राठौड़ श्री संवाईसिंह जों
 जय संवाई दाता की...॥
 केशर कसुबो भाग लगत है मेवा मिश्री नारेलोरी ज्योत दाता
 जय संवाई दाता की ध्यावे हर गाँव बस्ती
 आरती करत राजेन्द्र अवस्थी भक्त
 राजदाता भक्ती अपनी दीजो सुख सम्पति साता
 जय संवाई दाता की...॥



॥ जय संवाई दाता की ॥

ॐ आरती माँ श्री बालगौरी माता जी री

ॐ 'श्री' 'माल' नगर भीनमाल माँ भक्तों की प्रतिपाल।
 तलबी तलाब माँ प्रकटिया, माँ बालगौरी मौरी माता ॥
 माँ की गोद बिराजे, भैरव मंगल मूरत नाथ।
 दुदेश्वर महादेव, मैहर करे, राके छत्र छावा॥
 नाम आपरो लेवता सब रोग दोष मुक्त हो जात।
 ॐ जय बालगौरी माता, मैया जय मंगल मूरतदाता ॥
 तुमको निश दिन ध्यावत, सुख सम्पत्ती पाता,
 ॐ जय बालगौरी माता सरस्ती, लक्ष्मी गौरी,
 तुमही जगमाता, जो कोई तुमको ध्याता॥
 रिद्धी-सिद्धी धनपाता...
 ॐ जय बालगौरी माता मणिमय मुकुट मैया के,
 मस्तक पर साजे, संग भैरव गणपती माँ बिराजे,
 ॐ जय बालगौरी माता तलबी तलाब पर नगर
 भीनमाल वंछस गौत्री आवे, कर दर्शन होवे,
 प्रसन्न मन माँ गुण थारा गावें,
 ॐ जय बालगौरी माता कमल आसन राजत,
 माँ चार भूजा धारी, सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी
 ॐ जय बालगौरी माता कर्ण फूल अति उज्जवल,
 झिलमिल सा चमके, गज मोतीयन माला
 माँ कंठन पर दमके...
 ॐ जय बालगौरी माता माँ की गोद मैं बिराजे, भैरव
 मंगल मूरत दाता, दुदेश्वर महादेव को ध्यावत, घर आनन्द आ
 ॐ जय बालगौरी माता तलबी तलाब प्रकटी,
 माँ वंछस गौत्र वाली श्री 'माल' भनिमाल मैं,
 सब श्रीमालियो की रखवाली
 ॐ जय बालगौरी माता, कंचन थाल शौभित अगर
 कपूर बाती आरती हम सब गावंत वंछस माँ गौत्री माता
 ॐ जय बालगौरी माता माँ को ध्यावत
 हर दिन राज, माँ नगर गाँव बस्ती,
 आरती कंत जसोल पंडित राजेन्द्र अवस्थी
 ॐ जय बालगौरी माता जो कोई माँ बालगौरी
 आरती गावे, दुःख दरिद्र जावे, सुख सम्पत्ती पावे
 ॐ जय बालगौरी माता

माजीसा रो चालिसो

नमो: नमो: स्वरूपा सुखा करनी।
 नमो: नमो: भटियाणी दुःख हरनी॥
 सोला सिणगार है राज तुम्हारी।
 नव कुट मैं फैली उजीयारी॥
 वर कल्याणसिंह दादा पृथ्वीराज।
 पिता जोगराज गाँव जोगीदा खास॥
 भाटी कुल मैं जामो पायो।
 राठौड़ों घर ब्याव रचायो॥
 भक्तिशक्ति सूं पिता रो मान बढ़ायों॥
 जसोल सोमबतमज मलाणी रे माय।
 जठे रूपादे भक्त मालदे होय॥
 कानों में झुमरा झुमें हिवड़े सुवरण हार।
 माथ पे बिन्दियां चमके सिंदूर रो सिणगार॥
 नेणों मैं नेहडलों झलकें आमा मुख मलके।
 वचनों में अमी रस घोले तप तेज रा झलके॥
 हाथी दांत चुडलो सोवे पायलिया से झनकार॥
 श्री जोगीदास री बेटी कहलाई बाला।
 आप ही स्वरूपा बाला॥
 तुमने कलयुग मैं सब नाचन हारी।
 आप हो रावल कल्याणसिंह री प्यारी॥
 रूप कलयुग में आपने धारा।
 भक्तों को सद्ध बुद्ध दे उबारा॥
 स्वरूपा रूप धरियो जग माई।
 श्री कल्याणसिंह अंग समाई॥
 श्री कल्याणसिंह के दो-दो राणी।
 एक देवड़ी तो दूजी भटियाणी॥
 दोनों में मैला मिलाप न आवे।
 भटियाणी पुत्र लालसिंह पावे॥
 कुंवर लालसिंह की है तु माता।
 भगतों की माता सुख दाता॥
 भक्तों की तु दुःख तारणी।
 हैं माँ तु जग कष्ट निवारणी॥

श्री देवड़ी के मन लालकुवर न भावे।
 तब देवड़ी जहर को प्यालों पावे॥
 देवड़ी सूं भटियाणी राखे बेण सूं आस।
 कुंवर संग मैं भटियाणी किनो अमर लोक में वास॥
 जोगीदा सूं आयो दमामी राख विश्वास।
 थारा भटियाणी गया स्वर्गवास॥
 भटियाणी यह कहत पुकारी।
 कलयुग मैं होगी पूजा शक्ति हमारी॥
 महाराणी का रूप समझ न पाया।
 राणी गई जद मन पछताया॥
 दमामी करे हाथ जोड़ अरदास।
 कहां है म्हारी बाईसा का वास॥
 कहां है श्मशान जदमामी।
 लीनी मिलने री ठान॥
 धरियो रूप महाराणी स्वरूपा।
 प्रकट भई कागा मैं अनुपा॥
 भगत करत मन विलासा।
 भटियाणी करो मन की पूरी आशा॥
 दमामी ने दर्शन कागा मैं दिना।
 वचन माता और किना॥
 रावले कैजे मन्दिर बनावो।
 सुख शांति फल पावो॥
 दमामी शकिनी हाथ जोड़ अरदास।
 रावल राजा न राखे विश्वास॥
 कानों सूं सुणीयोडी कासी।
 आँख्यां सूं देखी सांची॥
 राजा स्मशान मैं लकड़ी दीनी ठोर।
 सात दिनों रे मायने खेजड़ो बनियो जोर॥
 जद माजीसा रो नयो मन्दिर किनी।
 रावला महलों मैं दिवलां लगाय परसा दिना॥
 जय जय जय हो जसोल महाराणी।
 सात बायांसा संग भैरू अगवानी॥

भटियाणी ऊँचे आसन विराजे।
जाको देख देव दुष्ट भागे॥
सबी भोमिया देव को अरंदास।
सफल करो भमतों रा काज॥
भैरूजी भटियाल विराजे।
खुट-खुट मैं डंको बाजे॥
कुंवर झसा जोरावर सिवरू बारम्बार।
नमू सवाईसिंह ने दोनों जग दातार॥
रूप भोमिया सवाईसिंह ने धारा।
सेना सहित आपने दुष्टों को मारा॥
मुझे भटियाणी संकट ने घेरा।
दुष्टों का नाश किजे महाराणी।
सिवरू तुझे जग कल्याणी॥

करो कृपा है भटियाल दयाला।
विपदा संकट मैंटो करो निहाला॥
ध्यावे तुम्हे गांव और बस्ती।
चालिसो रचियो राजेन्द्र अवस्थी॥
जग लागे मन्दिर आऊं।
आपको प्रार्थना सदा सुनाऊं॥
भटियाणीसा को जो चालिसो गावे।
विपदा संकट सब भागा जावे॥
माता राणी भटियाणी करो हृदय मैं वास।
मनोकामना सिद्ध करो पूर्ण करो आस॥
जो सत् बार पाठ करे मन में श्रद्धा धार।
कष्ट कटे महिमा बढे सम्पत् होत अपार॥

-राजेन्द्र अवस्थी (श्री राजू महाराज), लेखक निर्देशक

—सहयोगी—

विनोद अवस्थी जसोल, मुकेश अवस्थी जसोल,
माजिसा मित्र मण्डल जसोल, महा भैरव सेवा समिति खेड़,
माँ दाता भैरव धाम, जसोल, माजिसा दाता गुरु धाम जसोल,
जीतेन्द्र कुमार जोशी, जोधपुर, माँ अर्बुदा ग्रुप, बालोतरा

श्री खेड़ भैरूजी : ॐ आरती श्री भैरवनाथ जी री

ॐ जय काली लाल मैया जय काली
लाला करो जग उजाला भक्तों के रखवाला
ॐ जय काली लाला
कानन कुंडल शोभित गल विश रूंडमाला।
जट मुकुट सौभित नैत्र लाल विशाला।
चढ़ावे तेल नारेल और गौठा ॐ जय काली लाल
हाथ मैं गौढा मन्दिर छोटा, संकट हो मोडा
ॐ जय काली लाल
दो भुज चार चतुर भुज दस भुज सोवे है
तीनों रूप नहीं रखता त्रिभूवन मन मोवे
ॐ जय काली लाल
अक्षमाला, वनमाला, मुड़माला धारी,

स्वान सवारी खड़क खपर धारी ॐ जय काली लाल
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे कर्म
कमडल खड़क खपर भभूत अंगे ॐ जय काली लाल
रविवार है वार तिहारो, हो मैरी भैरू संकट हमारी
ॐ जय काली लाल
सुखकरता दुःखहता तु जग पालनकर्ता
खेड़ तलाब बिराजत, खड़क खपर वाला
ॐ जय काली लाल
चौसठ योगन मंगल गावे, बावनवीर न्यारे
आरती राजेन्द्र अवस्थी उत्तारें संकट हरा हमारे
ॐ जय काली लाल
जो कोई भैरूजी की आरती गावे

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस:

बेटियों के सपनों को पंख देने का संकल्प

‘जिस समाज में बेटियां सुरक्षित, शिक्षित और आत्मनिर्भर होती हैं, वही समाज वास्तव में विकसित कहलाता है।’

हर वर्ष 11 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल बेटियों को शुभकामनाएं देने या उनके सम्मान में कार्यक्रम आयोजित करने का अवसर नहीं है, बल्कि समाज को यह याद दिलाने का दिन है कि दुनिया की आधी आबादी का भविष्य आज की उन बालिकाओं के हाथों में है, जिन्हें हम अक्सर उनकी उम्र, लिंग और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर सीमित कर देते हैं। बालिका को समान अवसर, शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान देना केवल परिवार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारी है।

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2011 में की थी और पहला अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस 11 अक्टूबर 2012 को मनाया गया। इसका उद्देश्य बालिकाओं के सामने मौजूद चुनौतियों के प्रति दुनिया का ध्यान आकर्षित करना और उनके अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा तथा समान अवसरों को बढ़ावा देना है।

**बेटी केवल परिवार की जिम्मेदारी नहीं,
भविष्य की शक्ति है—**

हमारे समाज में सदियों से बेटी को परिवार की खुशियों और संस्कारों से जोड़ा जाता रहा है। लेकिन बदलते समय ने यह साबित कर दिया है कि बेटी केवल घर की शोभा नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण की महत्वपूर्ण शक्ति है। आज बेटियां विज्ञान, चिकित्सा, सेना, खेल, प्रशासन, शिक्षा, राजनीति, अंतरिक्ष, उद्योग, कला और तकनीक जैसे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं।

फिर भी यह तस्वीर पूरी तरह उजली नहीं है। आज भी अनेक बालिकाओं को शिक्षा पूरी करने से पहले ही पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। कहीं आर्थिक स्थिति बाधा बनती है, कहीं बाल विवाह, घरेलू जिम्मेदारियां, सुरक्षा की चिंता और सामाजिक रूढ़ियां उनके रास्ते में खड़ी हो जाती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में यह चुनौती और गंभीर हो सकती है।

शिक्षा है सबसे मजबूत हथियार—

बालिका के सशक्तीकरण की शुरुआत शिक्षा से होती है। शिक्षित लड़की अपने अधिकारों को समझती है, अपने स्वास्थ्य और भविष्य के प्रति जागरूक होती है तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

एक लड़की को शिक्षित करने का अर्थ केवल एक व्यक्ति को पढ़ाना नहीं है। शिक्षित बेटी आगे चलकर एक जागरूक परिवार, स्वस्थ समाज और बेहतर पीढ़ी का निर्माण करती है। इसलिए बालिका की शिक्षा पर किया गया निवेश वास्तव में पूरे समाज के भविष्य में किया गया निवेश है।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी लड़की की पढ़ाई केवल इसलिए न रुके कि वह लड़की है। स्कूल तक सुरक्षित पहुंच, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, डिजिटल शिक्षा के अवसर, पुस्तकें, छात्रवृत्ति और उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन- ये सभी उसके अधिकार का हिस्सा होने चाहिए।

सुरक्षा के बिना स्वतंत्रता अधूरी है—

बालिकाओं की सुरक्षा आज सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों में से एक है। घर, स्कूल, सार्वजनिक स्थान और इंटरनेट- हर जगह ऐसा वातावरण होना चाहिए, जिसमें बालिका स्वयं को सुरक्षित महसूस करे।

सुरक्षा का अर्थ केवल अपराध से बचाव नहीं है। उसे मानसिक उत्पीड़न, भेदभाव, बाल विवाह, बाल श्रम, शोषण और साइबर अपराधों से भी बचाना आवश्यक है। परिवारों को बेटियों को डराने के बजाय उन्हें जागरूक और आत्मविश्वासी बनाना चाहिए। उन्हें यह सिखाना जरूरी है कि गलत व्यवहार होने पर वे चुप न रहें और विश्वसनीय व्यक्ति से सहायता मांगें।

साथ ही समाज को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। किसी लड़की के कपड़े, व्यवहार या बाहर जाने के समय को दोष देने के बजाय हमें अपराध और गलत मानसिकता को चुनौती देनी होगी।

डिजिटल युग में नई संभावनाएं और नई चुनौतियां—

आज का युग डिजिटल युग है। इंटरनेट और मोबाइल ने बालिकाओं के लिए ज्ञान और अवसरों की दुनिया खोल दी है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल पुस्तकालय, कौशल प्रशिक्षण और दुनिया भर की जानकारी अब उनकी पहुंच में है।

लेकिन इसके साथ साइबर बुलिंग, ऑनलाइन शोषण, फर्जी पहचान, निजी जानकारी के दुरुपयोग और इंटरनेट की लत जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं। इसलिए बालिकाओं को डिजिटल रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ डिजिटल सुरक्षा की शिक्षा देना भी आवश्यक है।

हमें बेटियों को केवल यह नहीं बताना चाहिए कि इंटरनेट पर क्या नहीं करना है, बल्कि यह भी सिखाना चाहिए कि तकनीक का उपयोग शिक्षा, करियर, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता के लिए कैसे किया जा सकता है।

परिवार की सोच में बदलाव जरूरी—

बालिका दिवस का सबसे बड़ा संदेश परिवारों के लिए है—बेटी और बेटे के बीच अवसरों का अंतर समाप्त किया जाए। बेटे को बेहतर शिक्षा और बेटी को केवल घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रखना अब स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। बेटी को भी अपनी पसंद का विषय चुनने, करियर बनाने, खेल खेलने, यात्रा करने, निर्णय लेने और अपने सपनों को पूरा करने का समान अधिकार मिलना चाहिए।

बेटी से यह कहना कि 'तुम लड़की हो, इसलिए यह काम नहीं कर सकती' उसके आत्मविश्वास को कमजोर करता है। इसके विपरीत जब माता-पिता कहते हैं, 'तुम मेहनत करो, हम तुम्हारे साथ हैं,' तो वही विश्वास उसकी सबसे बड़ी ताकत बन जाता है।

बाल विवाह व दहेज जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज—

बालिका के विकास में बाल विवाह और दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियां बड़ी बाधा हैं। कम उम्र में विवाह उसकी शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता के अवसरों को प्रभावित कर सकता है। समाज को यह समझना होगा कि बेटी की शादी उसकी उपलब्धियों का अंतिम लक्ष्य नहीं है। उसका शिक्षित, स्वस्थ,

आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विवाह जीवन का एक हिस्सा हो सकता है, लेकिन बेटी का पूरा जीवन विवाह तक सीमित नहीं किया जा सकता।

स्वास्थ्य और पोषण पर भी ध्यान जरूरी—

बालिकाओं के विकास में शिक्षा के साथ स्वास्थ्य और पोषण की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। किशोरावस्था में उचित पोषण, स्वच्छता, मासिक धर्म संबंधी जागरूकता और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच आवश्यक है।

कई बार परिवारों में बेटियों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं मिलती। यह सोच बदलनी होगी। स्वस्थ बालिका ही स्वस्थ महिला और स्वस्थ परिवार का आधार बन सकती है।

ग्रामीण बेटियों के सपनों को भी अवसर चाहिए—

भारत के गांवों में प्रतिभा की कमी नहीं है। आवश्यकता है तो केवल अवसरों की। गांव की बेटी भी डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, अधिकारी, उद्यमी या कलाकार बन सकती है। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्कूल, परिवहन, इंटरनेट, कौशल विकास केंद्र और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना आवश्यक है। स्थानीय समाज, पंचायत, स्वयंसेवी संस्थाएं और शिक्षण संस्थान मिलकर इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

पुरुषों और लड़कों की भूमिका भी महत्वपूर्ण—

बालिका सशक्तीकरण केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है। लड़कों और पुरुषों को भी इस बदलाव का भागीदार बनाना होगा। बचपन से लड़कों को समानता, सम्मान, सहमति और संवेदनशीलता की शिक्षा दी जानी चाहिए। जब भाई अपनी बहन के सपनों का सम्मान करेगा पिता बेटी को बराबर अवसर देगा और शिक्षक छात्राओं को प्रोत्साहित करेगा, तभी वास्तविक बदलाव आएगा।

बेटी को दया नहीं, अवसर चाहिए—

अक्सर बेटियों के लिए 'बेचारी' जैसे शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं। जबकि आज की बालिका को दया नहीं, अवसर और विश्वास चाहिए। उसे यह एहसास चाहिए कि उसके सपने भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने किसी लड़के के।

हमें बेटियों को मजबूत बनाने के साथ-साथ समाज की उस मानसिकता को भी मजबूत चुनौती देनी होगी जो उनकी सीमाएं तय करती है। बालिका से यह पूछने के बजाय कि 'तुम क्या कर सकती हो?', हमें उससे पूछना चाहिए- 'तुम क्या बनना चाहती हो?'

संकल्प आज का, परिणाम आने वाली पीढ़ियों का—

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस हमें एक सामूहिक संकल्प लेने का अवसर देता है। ऐसा समाज बनाने का संकल्प, जहां किसी बच्ची के जन्म पर निराशा नहीं, खुशी होय जहां उसकी शिक्षा को बोझ नहीं, निवेश माना जाए, जहां उसकी सुरक्षा के लिए उसकी स्वतंत्रता न छीनी जाए, जहां उसके सपनों पर लिंग की सीमा न लगाई जाए और जहां उसकी सफलता को परिवार की सफलता माना जाए।

आज आवश्यकता केवल 'बेटी बचाओ' की नहीं, बल्कि 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ, बेटी को निर्णय लेने योग्य

बनाओ और बेटी के सपनों को उड़ान दो' की है।

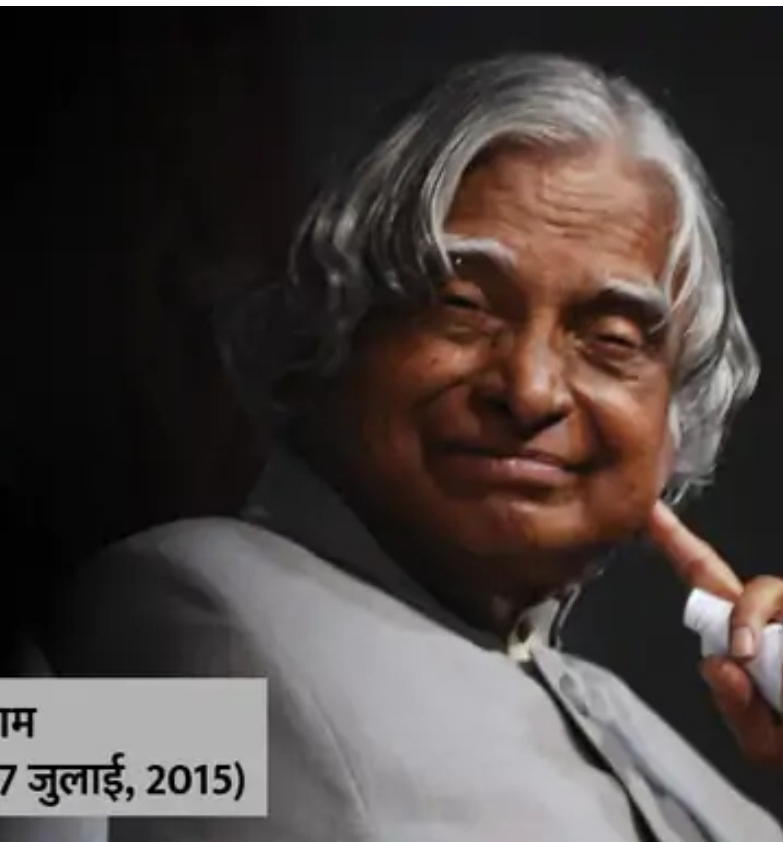
किसी देश का वास्तविक विकास उसके बड़े भवनों, सड़कों या आर्थिक आंकड़ों से ही नहीं मापा जाता। यह भी देखा जाना चाहिए कि वहां की बेटियां कितनी सुरक्षित हैं, कितनी शिक्षित हैं, कितनी स्वतंत्र हैं और उन्हें अपने भविष्य के फैसले लेने के कितने अवसर मिलते हैं।

इसलिए इस अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर हम केवल एक दिन के लिए बेटियों का सम्मान न करें। बल्कि हर दिन उनके अधिकारों, सम्मान और अवसरों की रक्षा करने का प्रयास करें। क्योंकि आज की बेटी केवल कल की महिला नहीं है- वह आज ही अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य की निर्माता है। उसे अवसर देंगे तो वह केवल अपना जीवन नहीं बदलेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की दिशा भी बदल सकती है।

**बेटी को उड़ने के लिए आसमान देने की जरूरत है,
उसके पंख तो प्रकृति ने पहले ही दे रखे हैं।**

"सपने वो नहीं
होते जो आप सोने
के बाद देखते हैं,
सपने वो होते हैं जो
आपको सोने नहीं
देते "

- ए.पी.जे.अब्दुल कलाम
(15 अक्टूबर, 1931- 27 जुलाई, 2015)



इस युग में दीपावली की महत्ता:

बाहर के दीपों के साथ भीतर का अंधकार भी मिटाएं

‘दीपावली केवल घर को रोशन करने का पर्व नहीं, अपने भीतर के अंधकार को पहचानकर उसे दूर करने का अवसर भी है।’

भारत त्योहारों की भूमि है और प्रत्येक पर्व अपने भीतर कोई न कोई जीवन-दर्शन समेटे हुए है। इन्हीं पर्वों में दीपावली का स्थान विशेष है। दीपावली अर्थात् दीपों की पंक्ति- अंधकार पर प्रकाश की विजय, अज्ञान पर ज्ञान की विजय, निराशा पर आशा की विजय और असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है।

परंपरागत रूप से दीपावली भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की स्मृति से जुड़ी है। अनेक परंपराओं में यह माता लक्ष्मी की आराधना, भगवान गणेश के पूजन और समृद्धि की कामना का पर्व भी है। जैन परंपरा में भगवान महावीर के निर्वाण से इसका विशेष संबंध है और सिख परंपरा में बंदी छोड़ दिवस के रूप में भी इसका ऐतिहासिक महत्व है। लेकिन आज प्रश्न यह है कि आधुनिक युग में दीपावली हमारे लिए क्या अर्थ रखती है? क्या केवल घरों की सजावट, नए कपड़े, मिठाइयां, खरीदारी और आतिशबाजी ही दीपावली का उद्देश्य है? शायद नहीं। दीपावली का वास्तविक संदेश इससे कहीं अधिक गहरा है।

अंधकार बाहर कम, भीतर अधिक है—

आज विज्ञान और तकनीक ने हमारे जीवन को रोशन कर दिया है। शहरों में रात भी दिन जैसी दिखाई देती है। मोबाइल, इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने ज्ञान की दुनिया को हमारी हथेली तक पहुंचा दिया है। फिर भी मनुष्य के भीतर तनाव, अकेलापन, क्रोध, ईर्ष्या, भय और असंतोष बढ़ता दिखाई देता है। इसलिए आज सबसे अधिक आवश्यकता उस दीपक की है जो हमारे भीतर जले।

यदि घर हजारों बिजली की झालरों से जगमगा रहा हो लेकिन मन में किसी के प्रति घृणा हो, यदि पूजा के स्थान पर दीप जल रहा हो लेकिन व्यवहार में छल हो, यदि हम लक्ष्मी की पूजा करें लेकिन श्रम करने वाले व्यक्ति का सम्मान न करें, तो दीपावली का मूल संदेश अधूरा रह जाता है। सच्ची दीपावली तब होगी जब हम अपने भीतर के किसी एक अंधकार को समाप्त करने का संकल्प लें।

एक दीपक ज्ञान का भी जलाएं

दीपक का सबसे सुंदर संदेश है—ज्ञान।

अज्ञान व्यक्ति को भय और अंधविश्वास की ओर ले जाता है, जबकि ज्ञान उसे विवेक देता है। आज सूचना की कमी नहीं है, बल्कि सही और गलत सूचना में अंतर करने की चुनौती है। सोशल मीडिया पर मिलने वाली हर जानकारी सच नहीं होती। ऐसे समय में विवेक का दीपक जलाना आवश्यक है।

इस दीपावली हम संकल्प ले सकते हैं कि प्रतिदिन कुछ समय अच्छी पुस्तक पढ़ेंगे, नई चीज सीखेंगे और बिना जांचे किसी सूचना को आगे नहीं बढ़ाएंगे। एक परिवार यदि दीपावली पर बच्चों को केवल महंगे उपहार देने के बजाय एक अच्छी पुस्तक भी उपहार में देता है तो वह आने वाले वर्षों के लिए ज्ञान का दीप जला देता है।

रिश्तों में फिर से रोशनी लाने का अवसर—

आधुनिक जीवन में हमारी सबसे बड़ी विडंबना यह है कि संचार के साधन बढ़ गए हैं, लेकिन संवाद कम हो गया है। परिवार के सदस्य एक ही कमरे में बैठकर भी अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। दीपावली हमें रिश्तों की ओर लौटने का अवसर देती है। किसी पुराने मित्र को फोन करना, किसी नाराज रिश्तेदार से बात करना, माता-पिता के साथ समय बिताना, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना और बच्चों के साथ बैठकर बातें करना- ये छोटे-छोटे कार्य जीवन में बड़ी रोशनी ला सकते हैं। कई बार रिश्ते किसी बड़े विवाद से नहीं, बल्कि छोटी-छोटी उपेक्षाओं से कमजोर होते हैं। दीपावली उस दूरी को कम करने का सुंदर अवसर है।

लक्ष्मी केवल धन का नाम नहीं—

दीपावली पर माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। सामान्य रूप से लक्ष्मी को धन और समृद्धि की देवी माना जाता है। लेकिन समृद्धि का अर्थ केवल बैंक खाते में धन बढ़ना नहीं है।

स्वास्थ्य लक्ष्मी है, ज्ञान लक्ष्मी है, समय का सदुपयोग

लक्ष्मी है, अच्छे संबंध लक्ष्मी हैं और संतोष भी एक प्रकार की संपदा है। यदि धन बहुत है लेकिन स्वास्थ्य नहीं, परिवार में प्रेम नहीं और मन में शांति नहीं, तो क्या उसे पूर्ण समृद्धि कहा जा सकता है? इसलिए दीपावली हमें धन कमाने के साथ-साथ धन के सही उपयोग की भी शिक्षा देती है। अपनी आवश्यकता पूरी करने के बाद समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ करना ही संपन्नता को सार्थक बनाता है।

दिखावे की जगह संवेदनशीलता—

आज दीपावली धीरे-धीरे उपभोग और दिखावे का पर्व भी बनती जा रही है। महंगे कपड़े, बड़े उपहार, अत्यधिक सजावट और अनावश्यक खरीदारी को ही त्योहार की सफलता मान लेना उचित नहीं है। त्योहार खुशी के लिए होते हैं प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं। हम जितना खर्च केवल दिखावे के लिए करते हैं, उसका एक छोटा हिस्सा किसी जरूरतमंद परिवार की सहायता में लगाया जाए तो दीपावली का आनंद कई गुना बढ़ सकता है।

किसी गरीब बच्चे को कपड़े देना, किसी बुजुर्ग के लिए आवश्यक सामान खरीदना, किसी विद्यार्थी की फीस या पुस्तक में सहयोग करना या किसी जरूरतमंद परिवार के घर राशन पहुंचाना- ये ऐसे दीप हैं जिनकी रोशनी लंबे समय तक बनी रहती है।

पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी—

दीपावली का एक महत्वपूर्ण आधुनिक संदेश पर्यावरण संरक्षण भी होना चाहिए। त्योहार मनाना हमारी परंपरा है, लेकिन प्रकृति की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है।

अत्यधिक पटाखों से वायु और ध्वनि प्रदूषण बढ़ सकता है। इसका प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों बीमार लोगों और पशु-पक्षियों पर भी पड़ता है। इसलिए दीपावली का उत्सव ऐसा हो जिसमें आनंद भी हो और संवेदनशीलता भी। मिट्टी के दीये जलाना, स्थानीय कारीगरों से सामान खरीदना, अनावश्यक प्लास्टिक से बचना और सीमित संसाधनों में सुंदर सजावट करना पर्यावरण तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था दोनों के लिए बेहतर हो सकता है।

दीपावली और स्थानीय कारीगर—

एक मिट्टी का दीपक केवल मिट्टी का बना हुआ छोटा पात्र नहीं है। उसके पीछे किसी कुम्हार का श्रम, उसके परिवार की

उम्मीद और उसकी आजीविका जुड़ी होती है। जब हम स्थानीय कारीगर से दीये खरीदते हैं तो हम केवल दीपावली की सजावट नहीं खरीद रहे होते, बल्कि किसी परिवार के घर में भी दीप जला रहे होते हैं। इसी प्रकार स्थानीय मिठाई विक्रेता, छोटे दुकानदार, हस्तशिल्प कारीगर और अन्य छोटे व्यवसायी त्योहारों से अपनी आय अर्जित करते हैं। स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना आर्थिक रूप से भी समाज को मजबूत बनाता है।

बच्चों को त्योहार का अर्थ समझाएं—

बच्चों के लिए दीपावली का अर्थ केवल पटाखे और मिठाई नहीं होना चाहिए। उन्हें बताया जाना चाहिए कि दीपावली क्यों मनाई जाती है और इसके पीछे कौन-से मूल्य छिपे हैं। उन्हें श्रीराम के जीवन से सत्य, मर्यादा और कर्तव्य की शिक्षा मिल सकती है। भगवान महावीर के संदेश से अहिंसा और आत्मसंयम की प्रेरणा मिल सकती है। दीपक से ज्ञान और सेवा की प्रेरणा ली जा सकती है। यदि अगली पीढ़ी त्योहार के पीछे छिपे मूल्यों को समझेगी तो हमारी संस्कृति केवल परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-मूल्य के रूप में आगे बढ़ेगी।

एक दिन नहीं, पूरे वर्ष की दीपावली—

दीपावली की सबसे बड़ी शिक्षा यह है कि प्रकाश केवल एक रात के लिए नहीं होना चाहिए। यदि हम दीपावली के दिन किसी से प्रेमपूर्वक मिलते हैं, तो यह भाव पूरे वर्ष रहना चाहिए। यदि हम उस दिन जरूरतमंद की सहायता करते हैं, तो सेवा का भाव आगे भी जारी रहना चाहिए। यदि हम उस दिन घर साफ करते हैं, तो मन की सफाई भी लगातार करनी चाहिए।

मन में जमा पुरानी शिकायतें, ईर्ष्या, अहंकार और कटुता भी किसी पुराने कचरे की तरह होती हैं। दीपावली हमें इन्हें बाहर निकालने का अवसर देती है। इस दीपावली एक अलग संकल्प लें, इस बार दीपावली पर हम कुछ ऐसे संकल्प ले सकते हैं—

एक दीप ज्ञान के नाम, हर दिन कुछ नया सीखेंगे।

एक दीप रिश्तों के नाम, किसी अपने से संवाद बढ़ाएंगे।

एक दीप सेवा के नाम, किसी जरूरतमंद की सहायता करेंगे।

एक दीप प्रकृति के नाम, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से बचेंगे।

एक दीप आत्मचिंतन के नाम, अपने भीतर की किसी बुरी आदत को छोड़ने का प्रयास करेंगे।

एक दीप राष्ट्र के नाम, अपने कार्य को ईमानदारी और जिम्मेदारी से करेंगे।

अंततः दीपावली हमें यह समझाती है कि अंधकार को कोसने से प्रकाश नहीं आता। उसके लिए एक छोटा-सा दीप जलाना पड़ता है। आज दुनिया में समस्याएं बहुत हैं- तनाव, हिंसा, प्रदूषण, असमानता, अकेलापन और अविश्वास। हम इन सभी समस्याओं को एक साथ समाप्त नहीं कर सकते, लेकिन अपने हिस्से का एक दीपक अवश्य जला सकते हैं।

किसी के जीवन में आशा का दीप, किसी के मन में विश्वास का दीप, किसी बच्चे के भविष्य में शिक्षा का दीप, किसी बुजुर्ग के जीवन में अपनापन का दीप और किसी जरूरतमंद

परिवार के घर में भोजन का दीप, यही दीपक मिलकर समाज को वास्तविक रूप से रोशन करेंगे।

इसलिए इस दीपावली केवल अपने घर की देहरी पर दीप न जलाएं। अपने मन, अपने परिवार, अपने समाज और किसी जरूरतमंद के जीवन में भी एक दीप जलाएं। क्योंकि सच्ची दीपावली उस दिन होगी, जब हमारे चारों ओर केवल घर नहीं, हृदय भी प्रकाशित होंगे।

‘दीप छोटा हो सकता है, लेकिन उसका प्रकाश अंधकार से हमेशा बड़ा होता है।’




दादोसा व दादीसा स्व. श्रीमती हरकुदेवी स्व. श्री राणमलजी पंवार (पान वाले)

की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट



स्वरूपकंवर (भुआसा)
जोगीदास धाम जेसलमेर



श्री माता राणी भटियाणी
जसरेल माता बालोतरा

संस्तुतः

माँ अर्बुदा ग्रुप बालोतरा

माँ माजीसा भारवाड़ दर्शन (हिन्दी पत्रिका)

सम्पर्क : 09549995777 (श्रवण कुमार पंवार)



Builder Township Colony
Plot in Agriculture
Real Estate Investment
Media Insurance

BHUMI

MARKETING

Digital Ideas, Powerful Solutions

आज ही अपने व्यापार को बनाएं डिजिटल

Bhumi Marketing

YOUR GROWTH, OUR MISSION



अब समय है
अपने बिजनेस को
ऑनलाइन पहचान, अधिक ग्राहक
और अधिक बिक्री देने का।

- 9887700059
- www.bhumi.marketing
- Support@bhumi.marketing
- Whatsapp
- Google Map
- SMS
- Facebook
- Instagram
- Website
- E-mail

BHUMI MARKETING – आपकी डिजिटल सफलता का पूरा समाधान

01 WEBSITE DEVELOPMENT - Custom Website Design - Responsive Design - User Friendly - SEO Friendly	02 SEO SERVICES - On-Page SEO - Off-Page SEO - Technical SEO - Keyword Research	03 SOCIAL MEDIA MARKETING - Page Management - Content Creation - Audience Engagement - Brand Awareness	04 GOOGLE ADS - Search Ads - Display Ads - Shopping Ads - Lead Generation
05 META ADS - Facebook Ads - Instagram Ads - Audience Targeting - Retargeting Ads	06 CRM & IVR SERVICES - Customer Management - Lead Management - IVR Setup & Management - Business Automation	07 WHATSAPP API & AUTOMATION - WhatsApp API Integration - Auto Reply / Chatbot - Bulk Messaging - Smart Automation	08 BULK SMS RCS - Transactional SMS - Promotional SMS - RCS Messaging - Bulk SMS Campaign

OUR CORE SERVICES

- Digital Marketing – ब्रांड को बढ़ाएं, ग्राहक बढ़ाएं, बिक्री बढ़ाएं।
- Website Development – प्रोफेशनल वेबसाइट जो आपके बिजनेस को नई पहचान दे।
- WhatsApp Marketing – सीधे ग्राहक से जुड़ें, तेजी से अपने संदेश पहुंचाएं।
- C.R.M. (Customer Relationship Management) – ग्राहक संबंधों को मजबूत करें, बिजनेस बढ़ाएं।
- I.V.R. (Interactive Voice Response) – प्रोफेशनल कॉल हैंडलिंग, बेहतर ग्राहक अनुभव।
- Whatsapp API & Automation – ऑटोमेशन से समय बचाएं, बढ़ाएं प्रोडक्टिविटी।
- Bulk SMS RCS (Transactional & Promotional) – एक साथ हजारों ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाएं।

Why Bhumi Marketing?

- WhatsApp & WhatsApp API
- Google Business & Google Maps
- SMS & Email Marketing
- Facebook & Instagram Ads
- Website + CRM + IVR Integration

कम बजट में बेहतरीन परिणाम

- छोटे व्यापार से लेकर बड़ी कंपनी तक समाधान
- लीड से लेकर सेल तक पूरा सिस्टम
- हर बिजनेस के लिए अलग डिजिटल रणनीति

आज ही अपने बिजनेस को डिजिटल बनाएं !

- वेबसाइट
- डिजिटल मार्केटिंग
- ब्राह्मस अप ऑटोमेशन
- CRM, IVR
- लीड सिस्टम



आज ही
Free Consultation
हेतु कॉल करें-

9887700059

9887700059
www.bhumi.marketing
Support@bhumi.marketing

— छोटे कदम बड़े सपनों की ओर — SINCE 1999 —

JAI JASOL

— DEVELOPERS —

पचपदस रिफाइनरी

के आसपास में

बड़ी ज़मीन व प्लॉट लेने के लिए

वह तरह के जमीन के कंसल्टेंट्स के लिए संपर्क करें

**बड़ी जमीन उपलब्ध**औद्योगिक, कमर्शियल एवं निवेश के लिए
उपयुक्त भूमि उपलब्ध।**निवेश के लिए बेहतरीन लोकेशन**रिफाइनरी के पास - भविष्य के लिए
सुनहरा अवसर।**उचित मार्गदर्शन एवं पारदर्शी डील**अनुभवी कंसल्टेंट्स द्वारा सुरक्षित
और पारदर्शी व्यवहार।**खरीद एवं बिक्री दोनों की सुविधा**खरीदने और बेचने - दोनों के लिए
संपूर्ण सहायता।

प्राइम लोकेशन



सुरक्षित निवेश



उचित मूल्य



समय पर डील



संपर्क करें

95499 95777



www.jaijasold.org.in



info@jaijasold.org.in

SINCE
1999
★★★★★



★ उद्योग का विस्तार ★
आपका निवेश
सही जगह, सही समय पर!



सामान्य ज्ञान—

राजस्थान संक्षिप्त परिचय

201. सेवण क्या है?

उत्तर- घास की किस्म का नाम

202. सेवण घास का वैज्ञानिक नाम क्या है?

उत्तर- लसियूरुस सिडीकुस

203. अमृतादेवी पुरस्कार का सम्बन्ध है?

उत्तर- वन संरक्षण से

204. अमृतादेवी राज्य स्तरीय पुरस्कार कब शुरू हुआ?

उत्तर- 1994 से

205. रिमोट सेंसिंग एक्लीकेशन सेंटर की स्थापना राज्य में कहाँ की गई है?

उत्तर- जोधपुर में

206. राजस्थान में घास की किस्में हैं?

उत्तर- धामण, तरङ्गम, अंजन व सेवण

207. रखत, कांकड़, डांग और रूद का सम्बन्ध है?

उत्तर- वनों के संरक्षण से

208. राजस्थान राज्य के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में वन भूमि है?

उत्तर- 7.8 प्रतिशत

209. राज्य में कुल कितने राष्ट्रीय उद्यान हैं?

उत्तर- 3

210. अमृतादेवी मृग वन स्थित है?

उत्तर- खेजड़ली (जोधपुर)

211. महुआ के पेड़ किन जिलों में होते हैं?

उत्तर- उदयपुर व चित्तौड़गढ़

212. राजस्थान में उगने वाले अर्जुन वृक्ष का मुख्य महत्व क्या है?

उत्तर- यह प्रत्यक्ष रूप से टसर रेशम के उत्पादन से जुड़ा है।

213. खेजड़ को स्थानीय भाषा में कहा जाता है?

उत्तर- जाटी, शमी, छोकड़ा

214. खेजड़ी को राज्य वृक्ष कब घोषित किया गया?

उत्तर- 1983 में

215. खेजड़ी की पत्तियों व फलियों को क्या कहते हैं?

उत्तर- पत्तियों को लूम व फलियों को सांगरी

216. कौन-से वृक्ष को 'जंगल की आग' के द्वारा सम्बोधित किया जाता है?

उत्तर- ढाक वृक्ष को/पलाश

217. प्राकृतिक रंगों के निर्माण में किस वृक्ष का उपयोग किया जाता है?

उत्तर- ढाक वृक्ष का

218. राज्य में नवीन वन नीति की घोषणा कब हुई?

उत्तर- 18 फरवरी 2010 में

219. राजस्थान में वन्य जीव अभ्यारण्य कितने हैं?

उत्तर- 27

220. राजस्थान में कुल कितने वन मण्डल हैं?

उत्तर- 13

221. राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा वन मण्डल है?

उत्तर- जोधपुर

222. राजस्थान का सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला मण्डल कौन-सा है?

उत्तर- उदयपुर

223. राजस्थान में प्रति हैक्टेयर सर्वाधिक जैव विविधता वाला देव वन किस जिले में है?

उत्तर- कोटा

224. जंगल की आग से आशय है?

उत्तर- पलाश के फूलों से

225. तेंदू के पत्ते मुख्यतः किस जिले में प्राप्त किये जाते हैं?

उत्तर- बाँसवाड़ा

226. बीड़ी किस वृक्ष के पत्तों से बनाई जाती है?

उत्तर- तेंदू के

227. 'स्मृति वन' कहाँ विकसित किया गया है?

उत्तर- झालाना (जयपुर)

228. राज्य का न्यूनतम वन क्षेत्र वाला जिला है?

उत्तर- चूरू

229. राजस्थान में घास के मैदान या चरागाहों को कहा जाता है?

उत्तर- बीड

230. शुष्क वन अनुसंधान संस्थान कहाँ स्थित है?

उत्तर- जोधपुर में

231. राजस्थान का कौनसा हिस्सा बड़े पैमाने पर वन क्षेत्र से रहित है?

उत्तर- पश्चिमी हिस्सा

232. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में वन क्षेत्र का प्रतिशत क्या है?

उत्तर- 9.57 प्रतिशत

233. पलाना किसके लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर- कोयला

234. झामर कोटड़ा राजस्थान में किस खनिज हेतु प्रसिद्ध है?

उत्तर- रॉक फास्फेट

235. राजस्थान में उत्तम किस्म के लिग्नाइट कोयले का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है?

उत्तर- पलाना (बीकानेर)

236. सर्वाई माधोपुर में चौथ का बरवाड़ा किस खनिज के लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर- सीसा-जस्ता की खान

237. जावर, रामपुरा-अगुचा, दरीबा व खेतड़ी में एक जिंक उत्पादक क्षेत्र नहीं है?

उत्तर- खेतड़ी

238. जिप्सम राजस्थान में मुख्य रूप से कहाँ पाया जाता है?

उत्तर- गोठ मांगलोद (नागौर) व जामसर (बीकानेर)

239. राजस्थान में पाये जाने वाले खनिज जैसे जिप्सम, रॉक फास्फेट और पाइरॉइट किस निर्माण में आवश्यक है?

उत्तर- रासायनिक उर्वरक

240. 'हरसौठ' किस खनिज को कहा जाता है?

उत्तर- जिप्सम

241. कौनसा खनिज उर्वरकों के उत्पादन में काम में लिया जाता है?

उत्तर- जिप्सम

242. पलाना, खारी, चात्तेरी किस खनिज के उत्पादक क्षेत्र हैं?

उत्तर- कोयला

243. लौह अयस्क उत्पादक क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर- मोरीजा, डाबला व निमला

244. तलवाड़ा, लीलावानी, कालाखूटा का सम्बंध किस खनिज से है?

उत्तर- मैंगनीज

245. राज्य में संगमरमर का सर्वाधिक उत्पादन कहाँ होता है?

उत्तर- राजसमंद

246. हीरे की खान राजस्थान में कहाँ है?

उत्तर- केसरपुरा (प्रतापगढ़)

247. राजस्थान का काला संगमरमर कहाँ निकाला जाता है?

उत्तर- भैंसलाना (अलवर)

248. दिल्ली के लाल किले के लिए 'लाल पत्थर' कहाँ से आया?

उत्तर- धौलपुर से

249. उदयपुर तथा भीलवाड़ा में मिलने वाले खनिज कौन-से हैं?

उत्तर- जस्ता, सीसा, चाँदी एवं ताँबा

250. अभ्रक ईट उद्योग के सर्वाधिक प्रसिद्ध जिला कौन-सा है?

उत्तर- भीलवाड़ा

क्रमशः

शेष प्रश्न अगले अंक में...

छोटे कदम बड़े सपनों की ओर | Since 1999

JAI JASOL

BUILDING MATERIAL



फैक्टरी से
सीधी सप्लाई



थोक रेट की
गारंटी



पूरे भारत में
डिलीवरी



भरोसे की
पहचान

हर ईंट में भरोसा,
हर सपने की
मजबूत नींव



हमारे प्रोडक्ट्स



सीमेंट



सरिया



मुंगिया



रेत



ईंट



टाइल्स



ब्लॉक्स



P.O.P.



AAC BLOCKS

हल्के, मजबूत और टिकाऊ निर्माण के लिए सर्वोत्तम विकल्प



बेहतरीन
क्वालिटी



प्रतिस्पर्धी
रेट



बड़े प्रोजेक्ट के लिए
विशेष ऑफर



पूरे भारत में
सप्लाई सुविधा



आज ही कॉल करें

9460087795
9887700059



www.jaijasolbm.org



--	--	--	--	--	--	--	--